सहजयोग आज का महायोग

आत्मसाक्षात्कार से चित्त पर नियंत्रण की सहजता प्राप्त होती है

सहजयोग संस्थापिका श्री माताजी निर्मला देवी जी ने आत्मिक उन्नति के माध्यम से व्यक्ति के संपूर्ण विकास व उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। सहजयोग ध्यान चित्त को वर्तमान में प्रतिष्ठित कर परमात्मा से एकाकारिता को प्राप्त करना है। बालक जब इस संसार में जन्म लेता है तो उसका सीधा संबंध परमात्मा से होता है उसका मन व उसकी बुद्धि अबोध होती है क्योंकि वह इस भौतिक संसार से अनभिज्ञ होता है। जैसे जैसे समय व्यतीत होता है इस संसार में व्याप्त माया की पकड़ उसकी बुद्धि पर हावी होने लगती है और वह संसार में व्याप्त साधनों में सुख व प्रसन्नता की खोज करने लगता है। एक इच्छा उत्पन्न होती है फिर दूसरी, तीसरी और फिर यह समाप्त न होने वाला सिलसिला हो जाता है। यही मिथ्या इच्छाएं हमारे सुख दुख का निर्धारण करने लगती है परंतु कोई भी इच्छा हमें संपूर्णता की ओर नहीं ले जाती हम सदैव अतृप्त रहते हैं, क्योंकि हमारी इच्छाएं मिथ्या अर्थात् असत्य से जुड़ी होती हैं जो हमारे चित्त को भ्रमित करती रहती हैं। श्री माताजी ने अमृतवाणी में इसके बारे में इस प्रकार वर्णित किया है कि, बड़े आश्चर्य की बात है कि मानव जितना कुछ मिथ्या है, उसे कितने जोर से पकड़ लेता है और सत्य को पकड़ने में कितना कतराता है, जितनी जल्दी मिथ्या हमारे अंदर से मिटता जाता है उतने ही जल्दी हम लोग चित्त को हल्का कर लेते हैं, सहजयोग में यही चित्त जो है, परमेश्वर से जाके भिड़ता है, यही चित्त उस सर्वव्यापी परमेश्वर के प्रकाश में जाके डूब जाता है, यही मानव का चित्त जो कि हम प्रकृति का एक रूप समझते हैं, प्रकृति का ये जो फूल है वो परमात्मा के प्रेम में विसर्जित हो जाता है, लेकिन ये चित्त कितना बोझिल है, कितना अव्यवस्थित है कभी-कभी देखते ही बनता है, सहजयोगी की पहचान एक ही है कि आप कितने आनंद में उतरे हैं, आप कितने शान्ति में उतरे हैं, आप कितने प्रेम में उतरे हैं, मिथ्या पे रहने वाले लोग सहजयोग को नहीं प्राप्त कर सकते हैं।जैसे राखखुं तैसे ही रहूँ, सहजयोगी अगर इतना करलें कि जैसे भी रखो मंजूर है हमें, हरेक चीज में, हर परिस्थिति में आनंद आ सकता है। (21 दिसम्बर 1975) सहजयोग में कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने पर हमें अपने चित्त पर नियंत्रण की सहजता प्राप्त हो जाती है और सत्य की पहचान स्वतः ही होने लगती है।सहजयोग से संबंधित जानकारी निम्न साधनों से प्राप्त कर सकते हैं। यह पूर्णतया निशुल्क है। टोल फ्री नं - 1800 2700 800 बेवसाइट? - sahajayoga.org.in

स्वयं दिशा तय करें

जीवन में किसी भी कार्य को करने के लिए हम सबसे पहले उसे कार्य को क्यों कर रहे हैं, उसके पीछे हमारा क्या उद्देश्य है, जो भी कार्य हम कर रहे हैं, उसे कार्य का क्या परिणाम होगा। इस प्रकार से मंथन करने के बाद हम उस कार्य को अगर करते हैं तो कई बातें हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। उदाहरण के तौर पर अगर हमारी अभिरुचि कृषि में है, तो सबसे पहले हमारे पास क्या क्या संसाधन हैं ? उन संसाधनों का हम किस प्रकार बुद्धिमत्ता पूर्वक उपयोग करते है। जैसे हमारे पास कृषि भूमि तो है, पर उन्नत बीज व खाद तथा समयबद्धता से हम कार्य करेंगे तो परिणाम भिन्न होंगे। दूसरा उदाहरण अगर हम राजनेता बनना चाहते हैं, तो एक राजनेता में सबसे बड़ी खूबी तो संवाद की होना चाहिये। आप कितनी कुशलता से संवाद करते हैं, यह सबसे अधिक मायने रखता है। हम स्वयं अपने आप से पूछे कि हमारी सबसे अधिक रूची किस क्षेत्र में है, उसके बाद हम अपनी समस्त शक्ति, समय व विचार तथा उसकी बेहतर योजना पर कार्य करेंगे तो उतने ही अपेक्षित परिणाम आपको उस क्षेत्र में प्राप्त होंगे। हमारी अभिरुचि जिस क्षेत्र में सबसे अधिक है, अगर हम दिल से उस कार्य को करेंगे तो फिर हमारे लिए समय भी बाधा नहीं होगा, क्योंकि जिस क्षेत्र में हमारी रुचि है, उस क्षेत्र में कार्य करने पर हमें आनंद प्राप्त होता है। इस प्रकार जब कोई भी निर्णय हम स्वयं करते हैं तो उसकी जवाबदेही भी हमारी होती है, पूर्ण जवाबदेही से अपनी कार्ययोजना पर कार्य करें। आपकी राह में आपका आत्मविश्वास ही आपकी सफलता की सर्वप्रथम कुंजी होगी। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है, जिसे हम पूर्ण मनोयोग से करें और हमें परिणाम न मिले। इस प्रकार आप जीवन में तो सफल बनेंगे ही, समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत भी बनेंगे। विशेषः- जब आप स्वयं किसी भी कार्य को करने का मानस बनाते हैं, कार्य योजना तय करते हैं, अपनी अभिरुचि को ध्यान में रखकर आप कार्य करते हैं, तो आधी सफलता आपकी उसी समय तय हो जाती है।

बिन शिक्षक कैसे हो पढ़ाई

कोई भी शैक्षणिक संस्थान हो उसमें सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है वह है शिक्षक चाहे वह स्कूल हो, इंजीनियरिंग कॉलेज हो या फिर मेडिकल कालेज । कई राज्यों में हालात ऐसे हैं जहां सिर्फ स्कूलों में एक शिक्षक ही विद्यालय चलाने को मजबूर? है मध्यप्रदेश में 11000से अधिक विद्यालय? एक? ही शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं । निश्चित ही एक शिक्षक कैसे पांच कक्षाओं को अध्यापन कार्य करवा पाएगा साथ ही उसे विद्यालय के काम भी करना होते हैं सरकार एक तो नई भर्ती कर शिक्षकों की कमी दूर? करें साथ ही सालों से एक जगह जमे शिक्षकों को गांव भेजकर शिक्षकों की कमी पूरी करे।

साजिद अली चंदन नगर इंदौर।

सिंघम अगेन का प्रीमियर एंड पिक्चर्स पर

मुंबई, सिंघम अगेन एंड पिक्चर्स पर 19 अप्रैल रात 8 बजे अपने प्रीमियर के साथ टीवी पर आएगी। दमदार एक्शन, पकड़ बनाने वाली कहानी और बॉलीवुड के सबसे बड़े सितारों से सजी यह फिल्म रामायण के सार से प्रेरित है और एक्शन जॉनर को एक नई ऊँचाई पर ले जाती है।रोहित शेट्टी के निर्देशन में बनी इस फिल्म में दर्शकों को उनका सिग्नेचर हाई-ऑक्टेन स्टाइल और जोरदार कहानी देखने को मिलता है। अजय देवगन एक बार फिर अपने आइकॉनिक किरदार बाजीराव सिंघम के अवतार में लौटे हैं, जो इस बार अपनी पत्नी को बचाने और एक खतरनाक दुश्मन से टकराने के मिशन पर निकलते हैं।

जीवन के करीब हैं हिमाद्री 'समर्थ' के काव्य संग्रह की रचनाएं

पुस्तक समीक्षा---

मां सरस्वती पुत्री हिमाद्री 'समर्थ का काव्य संग्रह 'कस्तूरी मन मेरे सामने है। संग्रह में कुल 105 रचनाएं हैं। प्रथम रचना जीवनदायिनी मां को समर्पित है। रचना में मां की छवि देखिए इन दो पंक्तियों में-

'जिंदगी कड़क धूप तुम शीतल छांव हो मां,
धरा पर धानी चुनर लिए ईश स्वरूप हो मां।।'

दूसरी रचना जीवनदाता पिता को समर्पित है। वह पिता जो बच्चों के जीवन का आधार होता है। पिता पर लिखी मेरी एक रचना की कुछ पंक्तियां का उल्लेख मैं जरूर करना चाहूंगा-

पिता साधारण इंसान नहीं,
वह सूत्रधार है सृष्टि का,
पिता इक नश्वर काय नहीं,
वह अजर-अमर इक साया है।।

पिता है तो सिर ऊँचा है,
जग छोटा एक खिलौना सा,
हर मुश्किल है आसान वहां
जब हाथ पिता का पाया है।।

कुछ इन्हीं भावनाओं से लबरेज हिमाद्री की पिता पर लिखी

गई रचना की कुछ पंक्तियां-

पापा आपकी स्मृतियां हमारे जीने का आधार।
निस्वार्थ प्रेम आपका हमारे जीवन पर उधार।।
मजबूत स्तंभ बन आपने बनाया हमें फौलाद।
आपके छत्रछाया में घर आंगन रहा आबाद।।

हिमाद्री की रचनाओं में मन की भावनाएं बह रही हैं। रचना आईना, मौहब्बत-तुझे किस्मत में लिखूं, मीठी बानी का राज, प्रेम धुन, कोकिल कंठी, कोयल हिय, श्याम रंग राग बिहारी जैसी रचनाएं भाव प्रधान हैं। आपकी रचनाओं में हर रंग हैं, हर भाव हैं। जीवन के करीब हैं, राह दिखाता आईना है तो संदेश वाहक भी हैं। सभी रचनाओं से कुछ न कुछ सबक और संदेश मिलता है, यही रचनाओं की खूबी है। इनमें भक्ति है तो शक्ति भी है। रचनाएं पठनीय हैं तो संग्रहणीय भी। रचनाकार की एक विशेषता होती है कि जैसा उसके मन में होता है, वैसा ही उसकी रचनाओं में दिखाई देता है। रचनाएं, किसी भी रचनाकार की बोलती तस्वीर भी होती हैं। अपनी बात में हिमाद्री ने कहा भी है-

मन की बात मन ही जानता है
हमसे अधिक हमें और कौन पहचानता है,
सही कहते हैं योगीजन
मृग मरीचिका सा है यह जीवन
जी भर भटकने पर भी
कस्तूरी केन्द्र में है
मृग कहां जानता है।।

संपर्क संस्थान के अध्यक्ष श्री अनिल लढ़ा ने बहुत सटीक बात कही है कि इस संग्रह में अनेक महत्वपूर्ण बातें कविता के माध्यम से कही गई हैं, जो जीवन के सभी पहलुओं को छूते हुए मानव हृदय के भावों को व्यक्त करती हैं। ऐसे ही 'कस्तूरी मन' काव्य संग्रह की रचनाएं समाज में अपनी सुगंध बिखेरें, यही कामना है।

समीक्षा- काव्य संग्रह 'कस्तूरी मन',लेखिका- हिमाद्री 'समर्थ', जवपुर,प्रकाशक- साहित्यागार, जयपुर कुल पृष्ठ- 128,कुल कविताएं- 105,मूल्य- 250 रुपए,समीक्षक- संतराम पाण्डेय, मेरठ संपर्क- 8218779805

बुनियादी जरूरतों की पूर्ति आवश्यक

महोदय

शिक्षा रोजगार का माध्यम ही नहीं बल्कि सुसभ्य और संस्कारित समाज की नींव भी है। स्कूलों के प्रति आकर्षण में आजकल आधुनिकता की बड़ी भूमिका है?। लेकिन देखने में आता है कि सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी इस नींव को कमजोर कर रही है।शौचालयों का अभाव, स्वच्छ पीने का पानी न होना, पर्याप्त कक्षाओं, पुस्तकालय और खेल सामग्री की कमी जैसी वजह छात्र-छात्राओं की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न करते हैं। इसके अलावा लड़कियों के लिए बुनियादी जरूरतों की पूर्ति का अभाव भी खलता है।इसके अतिरिक्त योग्य शिक्षकों की कमी और तकनीकी संसाधनों का अभाव शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। डिजिटल युग में स्मार्ट क्लास और कंप्यूटर जैसी सुविधाएं बहुत जरूरी हो गई हैं लेकिन कई सरकारी स्कूल अभी भी इनसे वंचित हैं। सरकार को चाहिए कि वह इन समस्याओं को गंभीरता से ले और प्राथमिकता के आधार पर समाधान करे। शिक्षा में समानता तभी आएगी जब हर बच्चे को समान अवसर और सुविधाएं मिलें। इसकी शुरुआत गांव से होनी चाहिए जो वर्षों से अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहे हैं।एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को बेहतर शैक्षिक वातावरण मिले।

अमृतलाल मारू रवि इंदौर मप्र

स्कोडा ऑटो इंडिया ने नई स्कोडा कोडिएक को पेश किया

स्कोडा ऑटो इंडिया ने काइलैक रेंज के सफल लॉन्च के बाद अब अपनी लग्जरी 4×4 एसयूवी कोडिएक की नई जनरेशन लॉन्च करने की घोषणा की है। यह कोडिएक की दूसरी जनरेशन है, जो भारत और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पेश की जा रही है। भारत में यह कार लग्जरी लुक, बेहतर आराम, ऑफ-रोड चलने की ताकत, शानदार रोड परफॉर्मेंस और सात सीटों की सुविधा के साथ आ रही है।पेट्र जैनेबा, ब्रांड डायरेक्टर, स्कोडा ऑटो इंडिया ने कहा, ''मार्च में, काइलैक की लॉन्चिंग और कुशाक व स्लाविया के सपोर्ट से हमने भारत में अपनी सबसे बड़ी मासिक बिक्री हासिल की। यह इस साल हमारे कई नए रिकॉर्ड्स में से एक है।

मित्रता की मंदी

मैंने हाल ही में हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू के फरवरी अंक में एक बहुत ही रोचक लेख पढ़ा, जिसने मुझे तुरंत प्रभावित किया और मेरे साथ जुड़ गया। इसमें बताया गया है कि कैसे ÷मित्रता की मंदी÷ अपनी शब्दावली में अपना रास्ता बना रही है - एक गहरा बदलाव जिस तरह से अमेरिकी लोग मित्रता का अनुभव करते हैं और बनाए रखते हैं।अमेरिकन पर्सपेक्टिव्स सर्वेक्षण के अनुसार, अमेरिकी वयस्कों का प्रतिशत जो कहते हैं कि उनके पास कोई करीबी मित्र नहीं है, 1990 के बाद से चार गुना बढ़कर 12त्न हो गया है, जबकि उन लोगों का प्रतिशत जिनके पास 10 या अधिक करीबी मित्र हैं, लगभग तीन गुना कम हो गया है।मुझे लगता है कि शहरी भारत में भी ऐसा ही परिणाम दिख सकता है। हम तेजी से अधिक परिचितों और कम संख्या में मित्रों के साथ रह रहे हैं।

समय की बात

समय के साथ, हमने अपने सामाजिक जीवन को बदल दिया है। अब हम अधिक अकेले समय बिता रहे हैं और कम लोगों के साथ जुड़ रहे हैं। एक हालिया सर्वेक्षण में पाया गया कि अकेले भोजन करने की दर पिछले 2 वर्षों में 29त्न बढ़ गई है।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय अब %डिज़ाइन फॉर हेल्दी फ्रेंडशिप% नामक एक कक्षा प्रदान करता है - एक कक्षा जो छात्रों को अपने सामाजिक जीवन को उद्देश्यपूर्ण ढंग से संरचित करने में मदद करने के लिए समर्पित है।

सामाजिक संकट

ये रुझान एक गहरे सामाजिक संकट की ओर इशारा करते हैं। समय के साथ, हम अपने सामाजिक संबंधों को खो रहे हैं और अकेलेपन की ओर बढ़ रहे हैं।

मित्रता का महत्व

मित्रता हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह हमारे मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है। एक प्रमुख अध्ययन में पाया गया कि मित्रता और करीबी संबंध हमारे स्वास्थ्य और खुशी के सबसे अच्छे भविष्यवक्ता हैं।

निष्कर्ष

हमें अपने सामाजिक जीवन को पुनः बनाने और मित्रता को महत्व देने की आवश्यकता है। हमें अपने समय को प्राथमिकता देनी चाहिए और मित्रता को बनाए रखने के लिए प्रयास करना चाहिए।

जैसा कि मिर्जा गालिब ने कहा था-
दोस्तों के साथ जी लेने का मौका दे दे ऐ खुदा...
तेरे साथ तो मरने के बाद भी रह लेंगें !...

अजय कुमार बियानी
बालाजी स्काईज़, निपानिया, इंदौर

क्रॉम्पटन ने MED से सौर जल पंप ऑर्डर के साथ हरित ऊर्जा के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत किया

मुंबई, पंप उद्योग में अपनी नवोन्मेषी समाधानों के लिए प्रसिद्ध क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। कंपनी को प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री-कुसुम योजना (पीएम-कुसुम) के अंतर्गत सौर जल पंपिंग प्रणाली के लिए ऑर्डर मिला है।

इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करते हुए, कंपनी को महाराष्ट्र ऊर्जा विकास एजेंसी (MED) से महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर 10.60 करोड़ से अधिक मूल्य के सौर फोटोवोल्टिक जल पंपिंग सिस्टम (एसपीडब्ल्यूपीएस) के डिजाइन, निर्माण, आपूर्ति, परिवहन, स्थापना, परीक्षण और कमीशनिंग के लिए लेटर ऑफ अवार्ड (एलओए) प्राप्त हुआ है।

इस ऑर्डर के साथ, क्रॉम्पटन विश्वसनीय और कुशल सौर जल पंपिंग समाधानों के माध्यम से टिकाऊ खेती को सुलभ करने की अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करना जारी रखेगा।

कंपनी की मजबूत सेवा नेटवर्क, सक्षम चैनल पार्टनर और प्रदर्शन की विश्वसनीय विरासत इसे इस बढ़ती मांग को पूरा करने में सक्षम बनाती है।

लड़खड़ाते व्यवसायिक साम्राज्य को बचाने के लिये रामदेव ने खेला साम्प्रदायिक कार्ड

गत वर्ष मेरा एक लेख पूर्व चतुर ही नहीं बल्कि शातिर भी हैं बाबा रामदेव शीर्षक के साथ उस समय प्रकाशित हुआ था जब रामदेव व उनके व्यवसायिक सहयोगी बालकृष्ण ने सुप्रीम कोर्ट में चल रहे पतंजलि आयुर्वेद के गुमराह करने वाले एक दवा विज्ञापन मामले में सर्वोच्च न्यायालय में बिना शर्त अपनी ग़लती की माफ़ी मांगी थी ।

उस समय 'पतंजलि वेलनेस' ने एक विज्ञापन प्रकाशित किया था जिसके माध्यम से एलोपैथी चिकित्सा पद्धति पर ग़लतफ़हमियां' फैलाने का आरोप लगाया गया था। इसी विज्ञापन को लेकर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने 17 अगस्त 2022 को सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की थी। इस याचिका में 22 नवंबर 2023 को पतंजलि के बालकृष्ण व बाबा रामदेव की उस पत्रकार वार्ता के विषय में भी बताया गया था जिसमें पतंजलि ने मधुमेह और अस्थमा को 'पूरी तरह से ठीक' करने का दावा किया था। इसी मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने पतंजलि को सभी भ्रामक दावों वाले विज्ञापनों को तुरंत बंद करने का आदेश देते हुये यह भी कहा था कि अदालत ऐसे किसी भी उल्लंघन को बहुत गंभीरता से लेगा और हर एक प्रोडक्ट के झूठे दावे पर 1 करोड़ रुपए तक जुर्माना लगा सकता है। इसी मामले में अवमानना नोटिस का जवाब न देने जैसी चतुराई करने पर बाबा रामदेव व आचार्य बालकृष्ण दोनों को 2 अप्रैल को अदालत में व्यक्तिगत रूप में पेश होने का निर्देश दिया था। तब इसी मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से एक दिन पहले बाबा रामदेव और पतंजलि के एमडी आचार्य बालकृष्ण ने कोर्ट में हलफ़नामा दायर कर बिना शर्त माफ़ी मांगी थी और माफ़ीनामे में रामदेव और बालकृष्ण दोनों ने कहा था कि वे आदेश का पूरी तरह से पालन करेंगे और न्याय की गरिमा को बरक़रार रखेंगे।परन्तु अपना उत्पाद बेचने लिये दूसरी कम्पनी के उत्पाद को बदनाम करने जैसा उनका शातिरपन इस बार उन्हें इतना मंहगा पड़ जायेगा यह शायद रामदेव ने सोचा भी न होगा। इसी लिये वे देश और पूरी दुनिया में गर्मियों में घर घर पाए जाने वाले लोकप्रिय शीतल पेय ब्रांड %रूह अफ़ज़ा % की ओर इशारा करते हुये कुछ ऐसा बोल गये जिससे

उनकी साम्प्रदायिक मानसिकता तो उजागर हो ही गयी साथ ही रूह अफ़ज़ा की बैठे बिठाये ज़बरदस्त मार्केटिंग भी हो गयी। गत दिनों रामदेव ने फ़ेसबुक पर एक वीडियो जारी करते हुये कहा था कि -% शरबत के नाम पर एक कंपनी है जो शरबत तो देती है लेकिन शरबत से जो पैसा मिलता है उससे मदरसे और मस्जिदें बनवाती है। अगर आप वह शरबत पिएंगे तो मस्जिद और मदरसे बनेंगे और पतंजलि का शरबत पिएंगे तो गुरुकुल बनेंगे, आचार्य कुलम बनेगा, पतंजलि विश्वविद्यालय और भारतीय शिक्षा बोर्ड आगे बढ़ेगा।÷ उन्होंने साथ ही आगे यह भी कहा कि - ÷इसलिए मैं कहता हूं ये ÷शरबत जिहाद÷ है। जैसे लव जिहाद, वोट जिहाद चल रहा है वैसे ही %शरबत जिहाद% भी चल रहा है। रामदेव के इस विवादित व ज़हरीले बयान के बाद काफ़ी हंगामा खड़ा हो गया। ÷देश भर में बिक रहे अन्य शीतल पेय को लेकर भी रामदेव कहते रहे हैं कि- ÷गर्मियों में प्यास बुझाने के लिए सॉफ़्ट ड्रिंक के नाम पर लोग ठंडा मतलब टॉयलेट क्लीनर पीते रहते हैं। दरअसल 1906 में दिल्ली में रूह अफ़ज़ा की शुरुआत हकीम हाफ़िज़ अब्दुल मजीद द्वारा हमदर्द लेबोरेटरीज़ की बुनियाद रखने के साथ की गयी थी।

उन्होंने पारंपरिक यूनानी चिकित्सा की जड़ी-बूटियों और सीरप का उपयोग कर एक ऐसा पेय बनाया, जो गर्मी और हीट स्ट्रोक से राहत दे सके। इसी शीतल पेय का नाम रूह अफ़ज़ा रखा गया। अफ़ज़ा का शाब्दिक अर्थ है- ÷वह चीज़ जो आत्मा(रूह) को तरोताज़ा कर दे।÷ रूह अफ़ज़ा आज पूरे विश्व में लोगों का इतना पसंदीदा व स्वीकार्य पेय बन चुका है कि यह बिना विज्ञापन के ही पूरी दुनिया में छाया हुआ है। और प्रत्येक वर्ष करोड़ों रूपये की विदेशी मुद्रा कमाकर भारत की अर्थ व्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। शातिर रामदेव को शरबत जिहाद जैसे शब्दों से इसलिये भी परहेज़ करना चाहिए था कि उनके अपने उत्पाद दुनिया के कई मुस्लिम देशों में भी बिक रहे हैं। जिस मदरसे व मस्जिद से उन्हें चिढ़ है उसी मस्जिद व मदरसे से शिक्षित मौलवी मौलानाओं को अपने मार्केटिंग सहयोगी के तौर पर साथ लेकर वे अपने उत्पाद की मार्केटिंग ईरान सहित अन्य मुस्लिम देशों में करवाते देखे जा चुके हैं। परन्तु दरअसल रामदेव के बार बार अनेक प्रोडक्ट फ़ेल होने के कारण और कई बार उनके उत्पाद की विश्वसनीयता संदिग्ध होने के चलते यहाँ तक कि भारतीय सेना द्वारा उनके कई उत्पादों का सेम्पल फ़ेल किये जाने के बाद उनके पतञ्जलि ब्रांड की बिक्री बंद होने लगी है। उनके उत्पाद के शोरूम तो हर जगह मिल जायेंगे परन्तु ग्राहक कहीं नज़र नहीं आता। इसीलिये वे निराशा व कुंठा का शिकार होकर पहले तो विदेशी बनाम स्वदेशी का हौव्वा खड़ा कर लोगों में देशभक्ति की भावना जगा कर अपना व्यवसाय खड़ा करने की कोशिश में थे। फिर एलोपैथी बनाम आयुर्वेद का विवाद खड़ा कर उसका लाभ उठाना चाहा जिसपर अदालत में उन्हें मुंह की खानी पड़ी। आख़िरकार इसी कुंठा व निराशा के शिकार रामदेव ने सुप्रसिद्ध स्वदेशी कम्पनी हमदर्द के विरुद्ध साम्प्रदायिकता का कार्ड खेलते हुये इसे %शरबत जिहाद % तक बता डाला। और यहीं से इनकी हक़ीक़त उजागर हो गयी कि इन्हें अंग्रेज़ी या विदेशी से ही नहीं बल्कि स्वदेशी आयुर्वेदिक कम्पनी से भी आपत्ति है और उसमें भी इन्हें बुराई ही नज़र आती है ?

वास्तविकता यह है कि झूठ कुंठा व अत्यधिक महत्वाकांक्षा पर खड़ा रामदेव का साम्राज्य अब लड़खड़ाने लगा है। स्वयं रामदेव का व्यक्तित्व अब योगगुरु के बजाय शुद्ध व्यवसायी बाबा का बन चुका है।

इसी लड़खड़ाते व्यवसायिक साम्राज्य को बचाने के लिये ही रामदेव ने यह साम्प्रदायिक कार्ड खेला है। उन्हें उम्मीद तो थी

कि शरबत जिहाद कहने से उन्हें देश के बहुसंख्यक समाज का समर्थन मिल जायेगा परन्तु उसी बहुसंख्यक समाज ने रामदेव की इस बदकलामी का ऐसा मुंहतोड़ जवाब दिया कि खबरों के अनुसार रूह अफ़्ज़ा की बिक्री कई गुना बढ़ गयी। और अपने डूबते हुये व्यवसायिक साम्राज्य को बचाने के लिये ही रामदेव को साम्प्रदायिक कार्ड का सहारा लेना पड़ा और शीतल पेय भी %शरबत जिहाद% जैसी बेहूदा शब्दावली गढ़नी पड़ी।

निर्मल रानी